# MUNICIPAL BOARD PILIBANGA,

## DISTT. HANUMANGARH (Raj.)

## About :-

### *Introdation (ULB Introduction) :-*

नगरपालिका पीलीबंगा का गठन 01.06.1974 को हुआ। नगरपालिका पीलीबंगा तृतीय श्रेणी की नगरपालिका है। जिसमें वर्तमान में 25 वार्ड है।

# History/City Profile (ULB/City/Town History details)

पीलीबंगा कस्बा जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम एवं संभाग मुख्यालय बीकानेर से 200 किलोमीटर उत्तर–पूर्व में स्थित हैं। माध्य समुद्रतल से यह औसतन 183.315 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ है। ऐतिहासिक वर्णन से पता चलता हैं कि यहां वैदिक काल से सरस्वती नदी शिवालिक पहाड़ से निकल कर बहती थी, पीलीबंगा के आस पास कालीबंगा व रंगमहल से सिंन्धु घाटी सभ्यता की हड़प्पा संस्कृति के प्राचिन अवशेष खुदाई में पाये गये हैं जो लगभग 2400 ई0पूर्व के हैं कालान्तर में सरस्वती नदी लुप्त हो गई लेकिन उसके स्थान पर घग्घर नदी आज भी बहती हैं।

पीलीबंगा कृषि उपज की एक प्रमुख मंडी हैं जिसे पूर्व में लखुवाली मंडी के नाम से जाना जाता था एवं पीलीबंगा गांव की रोही मे रेलवे स्टेशन बनने से इसका नाम पीलीबंगा रखा गया।

# ऐतिहासिक स्थान –

कालीबंगा हड़प्पा संस्कृति के प्राचिन अवशेष खुदाई इस नगर में शौभायमान है।

कालीबंगा पुरातत्व संग्रहालय, तह0 पीलीबंगा

## जलवायू –

इस प्रदेश में वर्षा 5 इन्च से 10 इन्च के मध्य होती है तथा जलवायु खुश्क रहती है।

## स्थिति –

पीलीबंगा राजस्थान प्रदेश के उत्तर में 29डीग्री 27′ अक्षांश एवं 74डीग्री 05′ पूर्वी देशान्तर पर माध्य समुन्द्र तह से 183.315 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

## क्षेत्रफल –

नगरपालिका पीलीबंगा का क्षेत्रफल 29.53 वर्ग किलोमीटर है।

## जनसंख्या –

वर्ष 2011 की जनसंख्या के अनुसार शहर पीलीबंगा की जनसंख्या 37,324 है।

## साक्षरता –

शहर पीलीबंगा की वर्तमान में साक्षरता 70 प्रतिशत है जिसमें दो गैर सरकारी महाविधालय, दो आई.टी. आई. कॉलेज, एवं गैर सरकारी संस्थायें हैं।

# –: कालीबंगा का इतिहास :-

**इक** सभ्यता थी जो दुनिया में सबसे पहले विकसित होने वाले समाज से बनी. इक बस्ती थी जहां दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक हड़प्पा व मुअन जोदड़ो ( मोहन जोदड़ो, मोहें जो दड़ो, मुअन जो दरो) अथवा सिंधु घाटी कालीन सभ्यता पली फूली और मानों अचानक लुप्त हो गई. उसी बस्ती के अवशेष कालीबंगा में मिले. राजस्थान के हरियाणा सीमा से लगे हनुमानगढ़ जिले में पीलीबंगा तहसील में आता है यह गांव. तहसील मुख्यालय से एक सक पूर्व की ओर जाती है. घग्घर नदी पर बना पुल और उसके बाद बायीं ओर एक गांव. पहले कालीबंगा संग्रहालय, फिर थेड़. सड़क के बायीं ओर एक टीले में दबा एक गांव का इतिहास और सामने दायीं ओर एक जीवंत गांव.

हड़प्पा मुअन जो दरो या सिंधु घाटी सभ्यता के लगभग 100 स्थलों का अब तक पता चला है उनमें कालीबंगा क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है. मुअन जो दरो व हड़प्पा के बाद कालीबंगा, इस सभ्यता का तीसरा बड़ा नगर सिद्ध हुआ है. इसके एक टीले के उत्खनन में तांबे के औजार, हथियार व मूर्तियां मिलीं जो बताती हैं कि यह मानव प्रस्तर युग से ताम्रयुग में प्रवेश कर चुका था. यहां से सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी मुहरें मिली हैं, जिन पर वृषभ व अन्य पशुओं के चित्र व तृधव लिपि में अंकित लेख है जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है. वह लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी. यहां मिली अधिकांश अवशेषों को राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली तथा अन्य जगह भेजा जा चुका है. एक संग्रहालय यहां भी है कालीबंगा में मिले अवशेष एक समृद्ध, विकसित सभ्यता के प्रमाण हैं. एक ऐसी सभ्यता जो प्राचीन विश्व की दूसरी सभ्यताओं से उच्चतर नहीं तो, उनके समकक्ष तो थी वैसे कालीबंगा के थेड़ (टीले) को देखने का अब कोई सार नजर नहीं आता है क्योंकि जो उत्खनन स्थल या खेत वगैरह के अवशेष थे, उन्हें मोमजामा डालकर मिट्टी से पाट दिया गया है. कहने को तो यह इन साइटों को मेह, बारिश अंधड़ आदि से बचाने के लिए किया गया लेकिन अब सवाल रह जाता है कि वहां कोई शोधार्थी, जिज्ञासु क्या देखे. मिट्टी के टीले, इधर उधर फैले ठीकर ठीकरियां या झाड झंखाड़? सिंधु घाटी सभ्यता में इस क्षेत्र के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कालीबंगा या उससे पहले भद्रकाली से लेकर सुल्तान पीर, माणक थेड़ी, रंग महल, बड़ोपल, कालीबंगा व पीलीबंगा या उससे आगे तक अनेक ऐसे थेड़ हैं जहां सभ्यता के अवशेष मिले हैं, इनमें से सात आठ तो बाकायदा सरकारी रूप से एतिहासिक साइट घोषित हैं..